International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-5, Issue-3 June- 2018
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

उच्चतर माध्यमिक स्तरीय मेरठ शहर के विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करने में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की प्रभाविकता का अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) लवलता सिन्धु
एम0एस0सी0, एम0ए0, एम0एड0, पीएच0डी0
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
मेरठ कालिज, मेरठ।

सारांश

मूल्यों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है, मूल्य विहीन समाज द्वारा राष्ट्र निर्माण की कल्पना नहीं की जा सकती है। वर्तमान समाज में मूल्यों का ह्रास तेजी से हो रहा है। मानव में नैतिकता का अभाव है क्योंकि उसे नैतिक मूल्यों के बारे में बताया ही नहीं जाता है। नैतिक मूल्यों का महत्व राष्ट्र निर्माण हेतु, व्यक्तिगत उत्थान हेतु, सामाजिक उन्नति हेतु परमावश्यक है, जो मात्र शिक्षा द्वारा ही संभव है क्योंकि विद्यार्थियों के जीवन निर्माण का अधिकतम समय विद्यालय की पाठयचर्या से जुड़ा रहता है। विद्यालयीन क्रियाओं के द्वारा ही नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है, छात्र–अन्य छात्रों के सम्पर्क में आकर या सहपाठियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है, मूल्य ज्ञान का स्तर क्या है? सहपाठियों में भावनाएं किस प्रकार पनप रही है, की जानकारी लेकर या ज्ञान होने पर शिक्षक सोद्देश्य क्रियाओं को संचालित कर निर्देशित करते हुए नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है। मूल्य शिक्षा के विभिन्न व्यावहारिक पहलुओं पर विश्वभर में दार्शनिक व शैक्षिक क्षेत्रों में काफी चितंन हुआ है व उससे कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उजागर हुए है।

प्रस्तावना–

नैतिक मूल्यों का विकास मात्र सही अभिवृत्तियों को निर्माण कर गलत अभिवृत्तियों को सही अभिवृत्तियों में रूपान्तरित करने से ही संभव है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा में विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा का महत्पवूपर्ण योगदान हे। बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है, परन्तु मूल्य सिखाना अत्यन्त कठिन कार्य है। विभिन्न कक्षाओं के लिए अलग से पाठ्यक्रम बनाने तथा अलग–अलग मूल्यों का शिक्षण करने से बचना होगा। सम्पूर्ण विद्यालयी पाठ्यचर्या को विद्यार्थियों तक वांछित मूल्यों के सम्प्रेषण में समक्ष बनाकर, मूल्य अभिविन्यसित शान्त,

सहयोगी, सहानुभूतिमय, रचनाशील, अनुशासित, न्यायसंगत, अनुमेयतापूर्ण, स्वीकरण प्रधान तथा संघर्षहीन विद्यालयी वातावरण सृजित कर विद्यालय में ही विभिन्न मूल्यों को आत्मसात करने हेतु सक्रिय अवसर उपलब्ध कराए जा सकते है।

नैतिक मूल्य के महत्व के बारे में विचार तथा संवेगात्मक प्रतिबद्धता दोनों ही है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते समय शिक्षकों को विद्यार्थियों की बौद्धिक योग्यताओं के साथ उनके संवेगात्मक विकास के लिए भी योजनाबद्ध प्रयत्न करना चाहिए।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते समय शिक्षक को विद्यार्थियों को दूसरों की आवश्यकताओं व दृष्टिकोणों के प्रति संवेदनशील बनाने की कोशिश करना चाहिए।

मूल्य परक शिक्षा के संदर्भ में कोठारी आयोग (1964-66) के अनुसार 'आज के शालेय पाठ्यक्रम का एक गंभीर दोष यह है कि उसमें हमारे नैतिकख सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।'

कोई भी शिक्षा प्रणाली (राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली) जो लोगों के जीवन उनकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबंधित है, नैतिक मूल्य शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकती। अतः आयोग की इस अनुशंसा के अनुसार सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से परिपूर्ण नागरिक तैयार करने के लिए बालकों में बाल्यकाल से ही मूल्यों का विकास होना चाहिए।

सत्यपाल रूहेला (1989) ने निम्न तथ्य दिए है।

1- मानवीय मूल्यों के विकास हेतु शिक्षा को एक पृथक, अनिवार्य या ऐच्छिक विषय के रूप में विद्यालयी पाठ्यचर्या के अन्तर्गत शामिल करके विशेषज्ञ/शिक्षकों द्वारा नहीं पढ़ाया जाना चाहिए।

2- मूल्य शिक्षा को न ही निश्चित कालांश में न ही निश्चित प्रश्न पत्र के रूप में पढ़ाना चाहिए।

3- मूल्य शिक्षा को कतिपय धार्मिक प्रार्थनाओं, मंत्रों, सूत्रों, धार्मिक पात्रों व संतो के साहस व शौर्य की गाथाओं के अध्ययन के रूप में जीवाश्मीकृत भी नहीं करना चाहिए।

4- नैतिक मूल्य शिक्षा को मानव निर्माण के सजीव विज्ञान का रूप ग्रहण करना है तो सभी अभिभावकों व नागरिकों को अपने सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों–विद्यार्थियों, विद्यार्थियों के माता–पिता, कार्यकर्ता, मित्र, पड़ोसी से मूल्यों की शिक्षा देने की आशा करनी चाहिए।

शिक्षा की चुनौतीः नीति संबंधी परिप्रेक्ष्य नामक दस्तावेज में कहा गया है– 'शिक्षकों तथा छात्रों के बीच तालमेल और अनौपचारिक सम्पर्क के आभाव में सामूहिक जीवन, सांस्कृतिक कार्यकलाप तथाखेलकूद या तो होते ही नहीं है अथवा उनका उपयोग बहुत कम किया जाता है।' जिस वजह से छात्र का विकास असंतुलित रूप लेता जा रहा है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

अध्ययन हेतु उद्देश्य निम्न है–

- विद्यार्थियों में सहयोग मूल्य विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को संगठित करना।
- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण के मापन हेतु एक मापनी का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य तर्क के मापन हेतु एक मापनी का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना के मापन हेतु एक अर्थ–विभेदात्मक मापनी का निर्माण करना।
- सहयोग मूल्य के स्पष्टीकरण के सन्दर्भ में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता की प्रभाविकता का अध्ययन करना।
- सहयोग मूल्य सम्बन्धी तर्क के सन्दर्भ में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता की प्रभाविकता का अध्ययन करना।

- सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना के सन्दर्भ में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता की प्रभाविकता का अध्ययन करना।
- सहयोग मूल्य के स्पष्टीकरण के सन्दर्भ में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता एवं विवेचना की प्रभाविकता का अध्ययन करना।
- सहयोग मूल्य तर्क के सन्दर्भ में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता एवं विवेचना की प्रभाविकता का अध्ययन करना।
- सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागिता एवं विवेचना की प्रभाविकता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएँ है–

1- प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न मानवीय मूल्यों में से **'सहयोग मूल्य'** का ही अध्ययन किया गया है।

2- प्रस्तुत अध्ययन में सहयोग मूल्य के केवल तीन आयामों मूल्य स्पष्टीकरण, मूल्य तर्क ओर मनोवैज्ञानिक संकल्पना का ही अध्ययन किया गया है।

3- प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोग हेतु केवल राजकीय इण्टर कालिज मेरठ में अध्ययनरत उच्चतर माध्यमिक स्तरीय (11वीं, 12वीं) के विद्यार्थियों को लिया गया है।

4- प्रस्तुत अध्ययन केवल हिन्दी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण, सहयोग मूल्य तर्क एवं सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित सहयोग मूल्य अर्थ विभेदात्मक मपनी का प्रयोग किया गया।

1- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण मापन हेतु सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण मापनी का निर्माण किया गया।

2- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण मापन हेतु सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण मापनी का निर्माण किया गया।

3- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य तर्क के मापन हेतु सहयोग मूल्य तर्क मापनी का निर्माण किया गया।

4- विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना के मापन हेतु सहयोग मूल्य अर्थ विभेदात्मक मापनी का निर्माण किया गया।

अंक गणना

प्रत्येक चर से सम्बन्धित संकलित आँकड़ों के अंकन हेतु अंक गणना कुंजी निर्मित की गयी। विभिन्न उपकरणों से प्राप्त आंकडों का अंकन करने के लिए प्रयोग में लायी गयी कुंजिया परिशिष्ट क्रमांक अ, ब, एवं स, में दी गयी है।

साँख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आँकडों का विश्लेषण करने के लिए निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया है।

1- उद्देश्य क्रमांक 5, 6, 7, 8, 9, 10 से सम्बन्धित आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सहसम्बन्धित 't' का परीक्षण का प्रयोग किया गया।

2- उद्देश्य क्रंमाक 11, 12, 13, से सम्बन्धित आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) विधि को प्रयुक्त किया गया।

शोध परिणाम

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों का विवरण उद्देश्यों के क्रमानुसार निम्नलिखित है–

1- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण भावना अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–भावना अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

2- पाठ्यक्रम सहभागी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–रूचि अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–रूचि अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

3- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण आकांक्षा अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–आकांक्षा अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

4- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण क्रिया अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–क्रिया अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

5- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य तर्क अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य तर्क अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

6- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–मूल्याकंन अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–मूल्यांकन अंको के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

7- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–क्षमता अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–क्षमता अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

8- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–क्रिया अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य की मनोवैज्ञानिक संकल्पना–क्रिया अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

9- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सहभागी एवं विवेचना समूह का पश्च परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–भावना अंकों का औसत पूर्व परीक्षण सहयोग मूल्य स्पष्टीकरण–भावना अंकों के औसत से सार्थक रूप से अधिक पाया गया।

शैक्षिक प्रशासकों एवं नियोजकों हेतु अनुप्रयोग

1. प्रस्तुत अध्ययन में संगठित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की जानकारी शैक्षिक प्रशासक शिक्षकों को देकर, गतिविधियों का संपादन कराकर छात्रों में सहयोग मूल्य को विकसित करने हेतु प्रेरित कर सकेंगें।
2. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शैक्षिक प्रशासक विभिन्न मानवीय मूल्यों के विकास हेतु शिक्षकों को पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के संगठन हेतु प्रेरित कर सकेंगे।
3. प्रशासक प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कराने हेतु प्रेरित हो सकेंगें।
4. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शैक्षिक प्रशासक एवं नियोजक–शिक्षकों को विद्यालयों में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के आयोजन हेतु प्रेरित कर सकेंगे।
5. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शैक्षिक प्रशासक पाठ्यक्रम में मूल्य आधारित विषयवस्तु, गतिविधियों एवं नवीन शिक्षण विधियों को सम्मिलित करने हेतु प्रेरित हो सकेंगे।
6. प्रस्तुत अध्ययन में निर्मित उपकरणों का उपयोग शैक्षिक प्रशासक विद्यार्थियों के सहयोग मूल्य के मापन हेतु कर सकेंगे।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- Ahlgren, A. (1979) 'Sex differences in Cooperative and Competitive attitudes Johnson', D.W. from the 2nd through the 12th grades Dev, Psychology, 15, 45-49.
- Akhanand (1971) 'Eternal values for a Changing Society', BUB, Bombay, Swami 1971.

- Allport, G. (1954)'The Nature of Prejudice', Cambridge, Mass, Addison Wesley.
- Arora, G.L. and N.C.T.E., Bulleition, Vol., No. III March, 1991.
- Beck, I. L. (1989) 'An Instructional redesign of reading lesson: Effect on Comprehension'. Read, Res, Q, 17(4), 462-481.
- Beltaf, A.C. (1976) 'A Cognitive development orientation towards Moral Education: An Experimental study in Developing Moral Judgement through the comparable effects of two teaching strategies', Dissertation Abstract International, Vol.36, No. 11.